विषय सूची

अध्याय एक पृष्ठभूमि

1.1 संक्षिप्त परिचय 1

1.2 भौगोलिक स्थिति 1

1.3 प्रशासनिक संरचना 1-2

1.3.1 जिला/विकासखण्डवार प्रशासनिक व्यवस्था

1.4 मानव संसाधन – जनसंख्या 2-5

1.4.1 देश, प्रदेश एवं जिले की जनसंख्या के तुलनात्मक आँकड़े

1.4.2 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

1.4.3 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व एवं जनसंख्या वृद्धि

1.4.4 जिला/विकासखण्डवार अनुसूचित जाति /अनुसूचित जनजाति जनसंख्या एवं प्रतिशत

1.4.5 जिला/विकासखण्डवार ग्रामों का वर्गीकरण

1.5 शिक्षा एवं साक्षरता 6-7

1.5.1 देश, प्रदेश एवं जिला साक्षरता संबंधित तुलनात्मक आँकड़े

1.5.2 जिला/विकासखण्डवार शालाओं की स्थिति

1.5.3 जिला/विकासखण्डवार महाविद्यालय, व्यवसायिक एवं अन्य शिक्षण संस्थान

1.6 स्वास्थ्य 7-8

1.6.1 जिला/विकासखण्डवार स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण

1.6.2 जिला/विकासखण्डवार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कर्मचारी

1.7 कृषि एवं भूमि 8-11

1.7.1 देश, प्रदेश एवं जिला कृषि संबंधित तुलनात्मक आँकड़े

1.7.2 प्रमुख फसलों का उत्पादन

1.7.3 जिला/विकासखण्डवार भूमि उपयोग

1.7.4 रबी एवं खरीफ की फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल

1.8 पशुधन 12-13

1.8.1 जिला/विकासखण्डवार पशुधन का विवरण

1.8.2 जिला/विकासखण्डवार पशु चिकित्सालय/औषधालय एवं पशु सेवाऐं

1.9 सिंचाई 13-15

1.9.1 जिला/विकासखण्डवार सिंचाई सुविधाओं का वर्गीकरण

1.9.2 विकासखण्डवार औसत वार्षिक वर्षा

1.10 सड़क एवं रेल मार्ग 15

1.11 वन 16

1.12 महिला एवं बाल विकास 16-17

1.12.1 जिला/विकासखण्डवार आँगनवाड़ी केन्द्रों, बच्चों एवं गर्भवती माताओं की जानकारी

1.13 पेयजल 17-18

1.13.1 जिला/विकासखण्डवार पेयजल सुविधा युक्त ग्राम

1.14 सहकारिता 18

1.14.1 जिला/विकासखण्डवार शासकीय उचित मूल्य की दुकानों का विवरण

1.15 संचार 19

1.15.1 डाक एवं संचार सुविधाऐं

1.16 विद्युतीकरण 19-20
1.16.1 जिले की विद्युत खपत
1.17 उद्योग 20-21
1.17.1 जिला/विकासखण्डवार उद्योगों का वर्गीकरण
1.18 वित्तीय संस्थायें 21-22
1.18.1 विकासखण्डवार वाणिज्यिक/सहकारी बैंकों की स्थिति

अध्याय दो SWOT विश्लेषण एवं जिला दृष्टि

2.1 SWOT विश्लेषण 23-26
2.1.1 जिले की ताकत
2.1.2 जिले की कमजोरी
2.1.3 जिले के लिये अवसर
2.1.4 जिले के लिये खतरा
2.2 जिला दृष्टि 27
2.3 जिले के विभिन्न विकासखण्डों की ताकतों, कमजोरियों, अवसरों एवं खतरों का तुलनात्मक विश्लेषण 27-31

अध्याय–एक

जिले की पृष्ठभूमि

1.1 संक्षिप्त परिचय

डिण्डौरी मध्यप्रदेश का 48वाँ जिला है। इस जिले का निर्माण 25 मई 1998 को किया गया था। यह जिला निर्माण के पहले मंडला जिले का भाग था। यह क्षेत्र अपने पुरातन काल में लोधी एवं गौंड वंशो के राज्य के अधीन रहा है।

डिण्डौरी जिला एक ग्रामीण एवं आदिवासी बहुल जिला है । कुल जनसंख्या के 95 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते है। यहां 64.48 प्रतिशत आदिवासी जिनमें बैगा, कोल, प्रधान, धूला, भूमिया और अगरिया जनजातीयाँ हैं। जिले में समृद्ध प्राकृतिक संसाधन है। आर्थिक रूप से लोग खेती एवं वनोपज पर निर्भर हैं। जिले का 37.32 प्रतिशत भाग साल वनों से ढ़का हुआ है।

1.2 भौगोलिक स्थिति

डिण्डौरी जिला प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है जो छत्तीसगढ़ राज्य से लगा हुआ है। इसके पूर्व में प्रदेश के शहडोल, पश्चिम में मण्डला, उत्तर में उमरिया जिले एवं दक्षिण में छत्तीसगढ़ का बिलासपुर जिला स्थित है । जिला 80.35 से 80.58 डिग्री देशान्तर से 22.17 से 23.22 डिग्री अक्षान्तर पर स्थित है । नर्मदा नदी डिण्डौरी जिले के बड़े भाग से होकर गुजरती है। जो कि 1100 मीटर समुद्री तल से ऊपर स्थित है । यहॉ की मैकल पहाड़ियॉ वन औषधियों से परिपूर्ण है । डिण्डौरी जबलपुर से 144 कि0मी0, मण्डला से 104 कि0मी0 तथा दर्शनीय स्थल अमरकंटक से 88 कि0मी0 दूर है ।

1.3 प्रशासनिक संरचना

1.3.1 जिला/विकासखण्डवार प्रशासनिक व्यवस्था

डिण्डौरी जिला 2 तहसीलों – डिण्डौरी और शहपुरा एवं 7 विकासखण्डों एवं 9 राजस्व निरीक्षण मण्डलो में बंटा हुआ है। त्रिस्तरीय पंचायत राज्य व्यवस्था के अंतर्गत जिले में जिला पंचायत एवं 7 जनपद पंचायत (डिण्डौरी, अमरपुर, समनापुर, बजाग, करंजिया, शहपुरा और मेंहदवानी). एवं 364 ग्राम पंचायतें हैं। जिले में 996 राजस्व ग्राम हैं। जिनमें 902 आबाद ग्राम

एवं शेष ग्राम वीरान हैं, इसके अतिरिक्त 86 वन ग्राम भी हैं। जिले में 2 नगर पंचायते भी हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 6128 वर्ग कि0मी0 है।

तालिका 1.3.1 जिला/विकासखण्डवार प्रशासनिक व्यवस्था

क्र.	जिला/ विकासखण्ड	भौगोलिक क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	आबाद ग्राम	ग्राम पंचायतें	नगर पंचायतें
	जिला	6128	902	364	2
1	**डिण्डौरी**	1259	188	70	1
2	**अमरपुर**	623	101	43	0
3	**समनापुर**	806	115	48	0
4	**बजाग**	865	92	46	0
5	**करंजिया**	674	104	42	0
6	**शहपुरा**	1137	191	69	1
7	**मेंहदवानी**	764	111	46	0

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.4 मानव संसाधन – जनसंख्या

1.4.1 देश, प्रदेश एवं जिले की जनसंख्या के तुलनात्मक आंकड़े (जनगणना 2001)

1998 के पूर्व डिण्डौरी जिला मण्डला जिले का भाग था अतः मण्डला जिले की 1991 की जनगणना को आधार मानकर वर्तमान डिण्डौरी जिले के क्षेत्र संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इस आधार पर डिण्डौरी जिले का घनत्व 84 था, जनसंख्या वृद्धि दर 7.08 एवं लिगांनुपात 983 था। जनगणना 2001 के अनुसार डिण्डौरी जिले में देश (324) एवं प्रांत (196) की तुलना में जनसंख्या घनत्व बहुत कम (95) है। देश (21.34), प्रांत (24.34) की तुलना में जिले (13.45) की जनसंख्या वृद्धि दर बहुत कम है। डिण्डौरी जिले का लिंगानुपात (991), मध्यप्रदेश के लिंगानुपात (920) एवं देश के (933) लिंगानुपात से अधिक है। इस दृष्टि से डिण्डौरी जिले में महिलाओं के प्रति भेदभाव तुलानात्क रूप से कम होना प्रतीत होता है। यह जिला ग्रामीण बाहुल्य है, जिसमें 95 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है जबकि भारत में 72.18 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश में 73.33 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है। यहां अनुसूचित जाति तुलानात्मक रूप से बहुत कम (5.83 प्रतिशत) है जबकि अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक (64.48 प्रतिशत) है।

तालिका 1.4.1 देश, प्रदेश एवं जिले की जनसंख्या के तुलनात्मक आंकड़े (जनगणना 2001)

क्र.	विवरण	इकाई	भारत	म0प्र0	डिण्डौरी
(अ)	**जनसंख्या (जनगणना 1991)**				
1	जनसंख्या घनत्व	प्रति वर्ग किमी	324	196	84
2	जनसंख्या में वृद्धि	%	21.34	24.34	7.08
3	लिंगानुपात (प्रति 1000)	प्रति 1000	933	920	983
4	कुल जनसख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	%	78	73.33	98.48
(ब)	**जनसंख्या (जनगणना 2001)**				
1	जनसंख्या घनत्व	प्रति वर्ग किमी	324	196	95
2	जनसंख्या में दशकीय वृद्धि दर (1991–2001)	%	21.34	24.34	13.45
3	लिंगानुपात (प्रति 1000)		933	920	991
4	कुल जनसख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	%	72.18	73.33	95
5	कुल जनसख्या में अनुसूचित जाति जनसंख्या का प्रतिशत	%	16.20	15.17	5.83
6	कुल जनसख्या में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत	%	8.20	20.27	64.48

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.4.2 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

डिण्डौरी जिला 7 विकासखण्डों में बटा है। इसमें क्षेत्रफल की नजर से सबसे बड़ा विकासखण्ड डिण्डौरी (1259 वर्ग कि0मी0) और सबसे छोटा विकासखण्ड अमरपुर (623 वर्ग कि0मी0) हैं। जिले में जनसंख्या के फैलाव की नजर से देखें तो सबसे अधिक जनसंख्या 1,07,008 व्यक्ति डिण्डौरी विकासखंड में हैं। जनसंख्या एवं क्षेत्रफल की नजर से डिण्डौरी विकासखण्ड एवं शहपुरा विकासखण्ड लगभग बराबर हैं। इस जिले में मात्र दो नगर पंचायतें हैं। इस कारण जिले की ग्रामीण आबादी का प्रतिशत पर्याप्त रूप से अधिक है।

तालिका 1.4.2 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या (जनगणना 2001)

क्र.	जिला/ विकासखण्ड	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या			नगरीय जनसंख्या			ग्रामीण जनसंख्या		
			पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
	जिला	6128	291716	289014	580730	13814	13056	26870	277902	275958	553860
1	डिण्डौरी	1259	62557	61873	124430	8974	8448	17422	53583	53425	107008
2	अमरपुर	623	30308	30396	60704	NA.	NA	NA	30308	30396	60704
3	समनापुर	806	35221	34670	69891	NA.	NA	NA	35221	34670	69891
4	बजाग	865	36224	35387	71611	NA.	NA	NA	36224	35387	71611
5	करंजिया	674	376376	37325	75001	NA.	NA	NA	376376	37325	75001
6	शहपुरा	1137	56331	55966	112297	4840	4608	9448	51491	51358	102849
7	मेंहदवानी	764	33399	33397	66796	NA.	NA	NA	33399	33397	66796

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.4.3 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व एवं जनसंख्या वृद्धि

इस तालिका में डिण्डौरी जिले की ग्रामीण जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया हैं। 1991 की जनगणना के आधार पर अनुमानित आँकडों के अनुसार डिण्डौरी जिले की कुल ग्रामीण जनसंख्या 511849 है, जो 2001 की जनगणना में बढ़कर 553860 दर्ज की गई हैं। डिण्डौरी जिले में ग्रामीण जनसंख्या का घनत्व 90 प्रति वर्ग कि.मी. हैं। वर्ष 1991–2001 के दशक में जनसंख्या वृद्धि 7.58 प्रतिशत है। विकासखण्डवार जनसंख्या घनत्व देखने पर सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व करंजिया विकासखण्ड में प्रति वर्ग कि.मी. 111 व्यक्ति है और सबसे कम जनसंख्या घनत्व बजाग विकासखण्ड में प्रति वर्ग कि.मी. 83 व्यक्ति है। विकासखण्डवार जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत देखें तो सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि करंजिया विकासखण्ड में 15.23 प्रतिशत है और सबसे कम जनसंख्या वृद्धि शहपुरा विकासखण्ड में 4.65 प्रतिशत है। डिण्डौरी विकासखण्ड में इस दशक के दौरान जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई बल्कि जनसंख्या में –2.48 प्रतिशत की कमी हुई है।

तालिका 1.4.3 जिला/विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व एवं जनसंख्या वृद्धि (जनगणना 2001)

क्र.	जिला/ विकासखण्ड	कुल ग्रामीण जनसंख्या		जनसंख्या घनत्व	जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत (1991–2001)
		1991	2001	प्रति वर्ग कि0मी0	कुल
	जिला	511849	553860	90	7.58
1	डिण्डौरी	109670	107008	99	–2.48
2	अमरपुर	54197	60704	97	10.71
3	समनापुर	60526	69891	87	13.39
4	बजाग	66117	71611	83	7.67
5	करंजिया	63571	75001	111	15.23
6	शहपुरा	98065	102849	99	4.65
7	मेंहदवानी	59703	66796	87	10.61

स्रोत जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.4.4 जिला/विकासखण्डवार अनुसूचित जाति/ जनजाति जनसंख्या एवं प्रतिशत

निम्न तालिका डिण्डौरी जिले की अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या एवं उनके प्रतिशत को दर्शाती है। जिले की कुल अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या 408295 है जिसमें अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या क्रमशः 33848 एवं 374447 हैं। जिले में कुल जनसंख्या से अनुसूचित जाति का प्रतिशत 5.83 एवं अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 64.48

हैं। जिले में अनुसूचित जनजाति का कुल जनसंख्या का (64.48) प्रतिशत राज्य (20.27) एवं देश (8.20) की अनुसूचित जनजाति के प्रतिशत से ज्यादा है।

तालिका 1.4.4 जिला/विकासखण्डवार अनुसूचित जाति/जनजाति जनसंख्या एवं प्रतिशत (जनगणना 2001)

क्र.	जिला/ विकासखण्ड	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या में अनु0जाति का प्रतिशत	कुल जनसंख्या में अनु0जनजाति का प्रतिशत
	जिला	33848	374447	580730	5.83	64.48
1	डिण्डौरी	7837	68105	124430	5.45	51.32
2	अमरपुर	1561	40680	60704	2.57	67.01
3	समनापुर	1792	44686	69891	2.56	63.94
4	बजाग	4020	46757	71611	5.61	65.29
5	करंजिया	2585	55495	75001	3.44	73.99
6	शहपुरा	15257	67447	112297	13.16	58.68
7	मेंहदवानी	796	51277	66796	1.19	76.77

स्रोत जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.4.5 जिला/विकासखण्डवार ग्रामों का वर्गीकरण

जिले के शहपुरा जनपद में सबसे अधिक 11 वीरान ग्राम हैं। 200 से कम जनसंख्या वाले सबसे अधिक 33 ग्राम डिण्डौरी विकासखण्ड में एवं 200 से 499 के मध्य जनसंख्या वाले सबसे अधिक 91 ग्राम शहपुरा विकासखण्ड में हैं। 500–999 के मध्य जनसंख्या वाले सबसें अधिक ग्राम शाहपुरा विकासखंड एवं डिण्डौरी विकासखंड में क्रमशः 70 और 63 है। डिण्डौरी विकासखण्ड में सबसे अधिक 17 ग्राम 1000 से 1999 के मध्य जनसंख्या वाले हैं। जिले के 2000–4999 के मध्य जनसंख्या वाले कुल 09 ग्रामों में से सबसे अधिक 4 ग्राम करंजिया विकासखण्ड में हैं।

तालिका 1.4.5 जिला/विकासखण्डवार ग्रामों का वर्गीकरण (जनगणना 2001)

क्र0	जिला/ विकासखण्ड	वीरान गाम	200 से कम	200-499	500-999	1000-1999	2000-4999	कुल
	जिला	28	115	374	334	70	9	930
1	डिण्डौरी	5	33	74	63	17	1	193
2	अमरपुर	1	10	41	44	6	NA	102
3	समनापुर	2	13	54	43	4	1	117
4	बजाग	2	6	28	41	16	1	94
5	करंजिया	1	12	42	32	14	4	105
6	शहपुरा	11	24	91	70	5	1	202
7	मेंहदवानी	6	17	44	41	8	1	117

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.5 शिक्षा एवं साक्षरता

1.5.1 देश, प्रदेश एवं जिला साक्षरता संबंधित तुलनात्मक आँकड़े

यह तालिका डिण्डौरी जिले के साक्षरता संबंधित आँकड़ो का राज्य एवं देश के आँकड़ो से तुलनात्मक स्थिति दर्शाती है। डिण्डौरी जिले की कुल साक्षरता दर 45.07 प्रतिशत है जो कि राज्य एवं देश की साक्षरता दर क्रमशः 64.11 प्रतिशत एवं 65.38 प्रतिशत की तुलना में बहुत कम है। जिलें में पुरूष साक्षरता दर बहुत कम 58.20 प्रतिशत है जो कि राज्य एवं देश की पुरूष साक्षरता दर क्रमशः 76.80 प्रतिशत एवं 75.85 प्रतिशत है। जिलें में महिला साक्षरता दर बहुत कम 31.83 प्रतिशत है जो कि राज्य एवं देश की महिला साक्षरता दर क्रमशः 50.28 प्रतिशत एवं 54.16 प्रतिशत है। महिला शिक्षा के आंकड़ों को देखे तो यह स्पष्ट है कि अभी भी जिले की लगभग दो तिहाई से ज्यादा महिलाएं साक्षर नहीं है।

तालिका 1.5.1 देश, प्रदेश एवं जिला साक्षरता संबंधित तुलनात्मक आँकड़े (जनगणना 2001)

क्र.	विवरण	इकाई	भारत	म0प्र0	डिण्डौरी
1	कुल साक्षरता	%	65.38	64.11	45.07
2	पुरूष	%	75.85	76.8	58.20
3	महिला	%	54.16	50.28	31.83

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

तालिका 1.5.2 जिला/विकासखण्डवार शालाओं की स्थिति

डिण्डौरी जिले में कुल 1375 प्राथमिक शालाऐं हैं। इसमें से सबसे अधिक 277 प्राथमिक शालाऐं डिण्डौरी विकासखण्ड में है और सबसे कम 167 बजाग विकासखण्ड में है। सबसे अधिक 81 माध्यमिक शालाऐं शहपुरा विकासखण्ड में है और सबसे कम माध्यमिक शालायें 35, करंजिया विकासखण्ड में हैं। डिण्डौरी एवं अमरपुर प्रत्येक विकासखण्ड में सबसे अधिक 7–7 हाईस्कूल हैं। सबसे अधिक हायर सेकेंडरी स्कूली शिक्षा की सुविधा डिण्डौरी एवं अमरपुर विकासखण्डों में है।

तालिका 1.5.2 जिला/विकासखण्डवार शालाओं की स्थिति

क्र.	विकासखण्ड	प्राथमिक शाला	माध्यमिक शाला	हाईस्कूल	उच्चतर माध्यमिक शाला
	जिला	1375	357	42	30
1	डिण्डौरी	277	71	7	6
2	अमरपुर	179	37	7	6
3	समनापुर	192	42	6	3
4	बजाग	167	46	6	4
5	करंजिया	176	35	6	4
6	शहपुरा	203	81	5	5
7	मेंहदवानी	181	45	5	2

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.5.3 जिला/विकासखण्डवार महाविद्यालय, व्यवसायिक एवं अन्य शिक्षण संस्थान

डिण्डौरी जिले में 2 स्नातक स्तर के महाविद्यालय हैं। अपेक्षाकृत सबसे अधिक उच्च शिक्षा की सुविधा डिण्डौरी एवं शहपुरा विकासखण्ड में है। तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये जिले में 1 आई टी आई एवं एक पॉलिटेक्निक संस्थान हैं।

तालिका 1.5.3 जिला/विकासखण्डवार महाविद्यालय, व्यवसायिक एवं अन्य शिक्षण संस्थान

विकासखण्ड	महाविद्यालय (स्नातक तक)	व्यवसायिक शिक्षण संस्थान	आश्रम व अन्य शालाएं
जिला	2	2	45
डिण्डौरी	01	1	04
अमरपुर	*NA*	*NA*	03
समनापुर	*NA*	01	06
बजाग	*NA*	*NA*	09
करंजिया	*NA*	*NA*	03
शहपुरा	01	*NA*	14
मेंहदवानी	*NA*	*NA*	06

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.6 स्वास्थ्य

1.6.1 जिला/विकासखण्डवार स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण

जिले में 1 चिकित्सालय/औषधालय हैं। सभी विकासखण्डों में 1–1 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र है। जिले के विकासखण्ड शहपुरा में सबसे अधिक 6 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। जिले में 160 उप स्वास्थ्य केंद्र हैं जिसमें से सबसे अधिक 30 विकासखण्ड डिण्डौरी एवं सबसे कम 17 मेंहदवानी विकासखण्ड में है।

तालिका 1.6.1 जिला/विकासखण्डवार स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण

क्र.	विकासखण्ड	ऐलोपैथिक/ चिकित्सालय / औषधालय	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	उप स्वास्थ्य केन्द्र
	जिला	01	07	22	160
1	डिण्डौरी	01	01	04	30
2	अमरपुर	0	01	02	21
3	समनापुर	0	01	02	21
4	बजाग	0	01	03	23
5	करंजिया	0	01	03	19
6	शहपुरा	0	01	06	29
7	मेंहदवानी	0	01	02	17

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.6.2 जिला/विकासखण्डवार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कर्मचारी

जिले में 25 ऐलोपैथी चिकित्सा अधिकारी एवं 6 अन्य पद्धतियों के चिकित्सा अधिकारी कार्यरत हैं। इनमें से सबसे अधिक 5–5 चिकित्सा अधिकारी बजाग एवं शहपुरा विकासखण्डों में हैं और केवल एक चिकित्सा अधिकारी समनापुर में हैं। सबसे कम चिकित्सा अधिकारी 1 समनापुर में है। सबसे अधिक 9 स्वास्थ्य निरीक्षक डिण्डौरी एवं शहपुरा विकासखण्डों में हैं। सबसे अधिक 13 नर्से डिण्डौरी विकासखंड मे कार्यरत है।

तालिका 1.6.2 जिला/विकासखण्डवार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कर्मचारी

जिला/ विकासखण्ड	चिकित्सा अधिकारी		संक्रामक रोग निवाणार्थ कर्मचारी	स्वास्थ्य निरीक्षक सुपरवाईजर	नर्स/ ए.एन.एम.	कम्पाउंडर
	ऐलोपैथी	अन्य पद्धति				
जिला	25	6		45	32	14
डिण्डौरी	4	4	अप्राप्त	9	13	6
अमरपुर	4	NA	अप्राप्त	6	3	2
समनापुर	1	NA	अप्राप्त	6	3	1
बजाग	5	NA	अप्राप्त	5	4	NA
करंजिया	3	NA	अप्राप्त	5	4	3
शहपुरा	5	1	अप्राप्त	9	4	1
मेंहदवानी	3	1	अप्राप्त	5	1	1

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.7 कृषि एवं भूमि

1.7.1 देश, प्रदेश एवं जिले के कृषि संबंधित तुलनात्मक आँकड़े

यह तालिका डिण्डौरी जिले के कृषि संबंधित आँकड़ों की राज्य एवं देश के आँकड़ों से तुलना को दर्शाती है। जिले के शुद्ध बोए गए क्षेत्र में द्विफसलीय क्षेत्र 36.67 प्रतिशत है जो

राज्य औसत (19.6) की तुलना में अधिक है। किन्तु जिले के शुद्ध बोए गए क्षेत्र में शुद्ध सिचिंत क्षेत्र 0.75 प्रतिशत है राज्य के औसत शुद्ध सिंचित क्षेत्र 30.73 प्रतिशत से बहुत कम है। इस प्रकार सिंचाई की दृष्टि से देखें तो डिण्डौरी जिला राज्य का सबसे पिछड़ा जिला है।

तालिका 1.7.1 देश, प्रदेश एवं जिले के कृषि संबंधित तुलनात्मक आँकड़े

क्र.	विवरण	इकाई	भारत	म0प्र0	डिण्डौरी
1	प्रति व्यक्ति बोया गया क्षेत्र	हेक्टर	अप्राप्त	0.3	0.35
2	शुद्ध बोये गए क्षेत्र में द्विफसलीय क्षेत्र	%	अप्राप्त	19.6	36.67
3	शुद्ध बोये गए क्षेत्र में शुद्ध सिंचित क्षेत्र	%	40	30.73	0.75

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.7.2 जिले में प्रमुख फसलों का उत्पादन

जिले की अधिकांश फसलों जैसे गेहूँ, धान, ज्वार, कोदो–कुटकी, तुवर, सोयाबीन, सरसों आदि के उत्पादन में कमी दर्ज की गई है। जिले की सबसे प्रमुख फसल धान है, किन्तु 2007–08 की अपेक्षा 2008–09 में धान का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 16.67 प्रतिशत से कम हो गया। 2007–08 की अपेक्षा 2008–09 में गेहूँ का प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 48.33 प्रतिशत कम हो गया। 2006–07 में गेहूँ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1200 कि.ग्रा. था, जो कि वर्ष 2008–09 में घटकर 620 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया। इसी प्रकार ज्वार का प्रति हेक्टेयर उत्पादन वर्ष 2005–06 में 1283 कि.ग्रा. से घटकर वर्ष 2008–09 में 900 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर दर्ज किया गया है। 2006–07 में चने का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2400 कि.ग्रा. था, जो कि वर्ष 2008–09 में घटकर 610 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया है। इस प्रकार चने के उत्पादन में 293.44 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। 2007–08 में तुअर का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2700 कि.ग्रा. था, जो कि वर्ष 2008–09 में घटकर 1010 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया है। इस प्रकार तुअर के उत्पादन में 62.59 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। 2006–07 में सोयाबीन का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1800 कि.ग्रा. था, जो कि वर्ष 2008–09 में घटकर 750 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया है। इस प्रकार सोयाबीन के उत्पादन में 58.33 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। 2006–07 में सरसों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 3500 कि.ग्रा. था, जो कि वर्ष 2008–09 में घटकर 590 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया है। इस प्रकार सरसों के उत्पादन में 493.22 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

इसके विपरीत केवल मक्का एवं मूँगफली के उत्पाद में वृद्धि दर्ज की गई है। मक्के का उत्पादन वर्ष 2008–09 में बढ़कर 1130 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर दर्ज किया गया है, जबकि वर्ष 2005–06 में प्रति हेक्टेयर उत्पादन 503 कि.ग्रा. था। इस प्रकार मक्के के उत्पादन में 124.65 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मूंगफली का उत्पादन वर्ष 2008–09 में 1125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर दर्ज किया गया है, जबकि वर्ष 2007–08 में इसका प्रति हेक्टेयर उत्पादन 300 कि.ग्रा. था। इस प्रकार मूंगफली के उत्पादन में 275 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

तालिका 1.7.2 प्रमुख फसलों का उत्पादन (किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर)

क्र.	वर्ष	गेहूँ	धान	ज्वार	मक्का	कोदो–कुटकी	चना	तुअर	मूंगफली	सोयाबीन	सरसों
1	2005-06	935	1352	1283	503	428	890	1580	अप्राप्त	1000	600
2	2006-07	1200	700	750	550	500	2400	2700	300	1800	3500
3	2007-08	715	1224	अप्राप्त	1211	अप्राप्त	662	2700	300	674	346
4	2008-09	620	1020	900	1130	220	610	1010	1125	750	590

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2009

1.7.3 जिला/विकासखण्डवार भूमि उपयोग

जिले की 95 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। उनकी आजीविका के मुख्य साधन कृषि एवं वन हैं। जिले में कृषि के अंतर्गत शुद्ध बोया गया क्षेत्र 204281 हेक्टेयर तथा द्विफसली क्षेत्र 74916 हेक्टेयर है। जिले में सबसे ज्यादा वन भूमि करंजिया (24. 15) प्रतिशत विकासखण्ड एवं सबसे कम शहपुरा (5.54) प्रतिशत विकासखण्ड में है। जिले में सबसे ज्यादा शुद्ध बोया गया क्षेत्र डिण्डौरी विकासखण्ड (44492 हेक्ट.) एवं सबसे कम समनापुर विकासखण्ड (22217 हेक्ट.) में है। जिले में सबसे ज्यादा द्विफसलीय क्षेत्र करंजिया विकासखण्ड (15473 हेक्ट.) एवं सबसे कम मेंहदवानी विकासखण्ड (5748 हेक्ट.) में है।

तालिका 1.7.3 जिला/विकासखण्डवार भूमि उपयोग (हेक्टेयर में)

क्र.	विकासखण्ड	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	वनभूमि (हेक्टेयर में)	पडतभूमि (हेक्टेयर में)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हेक्टेयर में)	द्विफसलीय (हेक्टेयर में)
	जिला	6128	230745.52	64277	204281	74916
1	डिण्डौरी	1259	48058.20	18097	44492	14657
2	अमरपुर	623	19572.00	5543	23721	7247
3	समनापुर	806	36959.70	4697	22217	8301
4	बजाग	865	30553.10	5292	22684	11188
5	करंजिया	674	55735.70	1874	25951	15473
6	शहपुरा	1137	12786.13	18043	40987	12302
7	मेंहदवानी	764	27080.69	10761	24229	5748

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.7.4 रबी एवं खरीफ की फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल

डिण्डौरी जिले में खरीफ एवं रबी ऋतु में खाद्य एवं अखाद्य फसलों के क्षेत्रफल क्रमशः 178699 हेक्टेयर तथा 100498 हेक्टेयर दर्ज किये गये। इन आंकड़ों से यह लगता है कि रबी ऋतु की अपेक्षा खरीफ ऋतु की फसलों की बुआई ज्यादा क्षेत्र में होती है। खरीफ में और रबी ऋतु अखाद्य फसले क्रमशः 31374 हेक्ट. तथा 23607 हेक्ट. दर्ज की गई। डिण्डौरी एंव शहपुरा विकासखण्ड में सबसे अधिक खरीफ क्रमशः 21.53 प्रतिशत तथा 19.43 प्रतिशत दर्ज की गई। रबी ऋतु में करंजिया में सबसे अधिक क्षेत्र में खाद्य फसल (22.28 प्रतिशत) दर्ज की गई।

तालिका 1.7.4 रबी एवं खरीफ की फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)

क्र.	विकासखण्ड	खरीफ		रबी		योग
		खाद्य फसले	अखाद्य फसले	खाद्य फसले	अखाद्य फसले	खरीफ + रबी
	जिला	147325	31374	76891	23607	279197
1	डिण्डौरी	31723	7205	14833	5388	56149
2	अमरपुर	16973	3084	8369	2542	30968
3	समनापुर	17834	1898	7891	2895	30518
4	बजाग	16579	2003	12343	2947	33872
5	करंजिया	16931	5318	17130	2045	41424
6	शहपुरा	28632	7431	12544	4682	53289
7	मेंहदवानी	18653	4435	3781	3108	29377

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.8 पशुधन

1.8.1 जिला/विकासखण्डवार पशुधन का विवरण

जिले में कुल दुधारू जानवर 94524 हैं। इनमें 79534 गायें एवं 14990 भैसें हैं। विकासखण्डवार देखें तो सबसे अधिक गायों की संख्या 17254 डिण्डौरी विकासखण्ड में तथा सबसे अधिक भैसों की संख्या 4450 विकासखण्ड शहपुरा में है। कृषि के काम में आने वाले सबसे अधिक बैलों की संख्या 35215 शहपुरा विकासखण्ड में हैं एवं सबसे कम 15574 कंरजिया विकासखण्ड में हैं।

तालिका 1.8.1 जिला/विकासखण्डवार पशुधन का विवरण

क्र.	जिला/ विकासखण्ड	गाय				भैंस		बकरी	सूकर	कुक्कुट
		नर	मादा	बछड़े	कुल	नर	मादा			
(अ)	जिला	148233	79534	67377	295144	33462	14990	61793	9325	124901
1	डिण्डौरी	31219	17294	16771	65284	3172	3694	13440	648	30900
2	अमरपुर	12195	10355	4425	26975	305	1553	2965	910	8120
3	समनापुर	17737	13201	4775	35713	16002	1956	7152	1010	3570
4	बजाग	18525	8387	4666	31578	2210	999	5549	1917	12424
5	करंजिया	15574	5082	5295	25951	3853	758	6337	1240	2662
6	शहपुरा	35215	11910	23175	70300	6690	4450	11180	1100	21725
7	मेंहदवानी	17768	13305	8270	39343	1230	1580	15170	2500	45500

स्रोत :जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.8.2 जिला/विकासखण्डवार पशु चिकित्सालय/औषधालय एवं पशु सेवाऐं

डिण्डौरी जिले में 9 पशुओं के लिए चिकित्सालय एवं 24 औषधालय हैं। वर्ष 2009 में 38769 पशुओं का उपचार किया गया है तथा 4003 पशुओं को बधियाकरण किया गया। 1,03,400 पशुओं को टीके लगाये गये है। 1980 पशुओं को कृत्रिम गर्भाधान कराया गया। विकासखण्डवार देखें तो सबसे अधिक 15519 पशुओं का उपचार समनापुर विकासखण्ड में हुआ। सबसे कम 1283, पशुओं का उपचार मेहदवानी विकासखण्ड में हुआ है। पशुओं को सबसे अधिक टीके डिण्डौरी विकासखण्ड 26294 में लगे हैं। बजाग विकासखण्ड में सबसे अधिक पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान कराया गया है।

तालिका 1.8.2 जिला/विकासखण्डवार पशु चिकित्सालय/औषधालय एवं पशु सेवाऐं

विकासखण्ड	चिकित्सालय	औषधालय	उपचारित पशु	बधिया किए गये पशु	टीकाकृत पशु	कृत्रिम गर्भ धारण किये गये पशु
जिला	9	24	38769	4003	103400	1980
डिण्डौरी	1	5	5009	573	26294	331
अमरपुर	1	2	1571	170	8683	183
समनापुर	1	4	15519	1331	21673	240
बजाग	2	3	7098	564	17326	769
करंजिया	1	4	3099	723	8669	137
शहपुरा	2	4	5199	509	15167	200
मेंहदवानी	1	2	1283	133	5588	120

स्रोत :जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.9 सिंचाई

1.9.1 जिला/विकासखण्डवार सिंचाई सुविधाओं का वर्गीकरण

डिण्डौरी जिले में सिंचाई की सुविधाएं नगण्य हैं। यहां कुल 1527 हेक्टेयर (0.75 प्रतिशत) क्षेत्र में सिंचाई होती है। जिले में सिंचाई की सुविधा को देखें तो सबसे अधिक 965 हेक्टेर क्षेत्र में नहरों से सिंचाई होती है, जो कुल सिंचित क्षेत्र का लगभग 25 प्रतिशत है। इसके बाद कुओं से 106 हेक्टेयर में सिंचाई होती है। विकासखण्डवार देखे तो नहरों से सबसे अधिक सिंचाई शहपुरा विकासखण्ड 379 हेक्टेयर क्षेत्र में होती है। जो कि कुल जो कि कुल नहरों से सिंचित क्षेत्र का 39.27 प्रतिशत है। नहरों से सबसे कम क्षेत्र में सिंचाई अमरपुर विकासखण्ड में 30 हेक्टेयर (3.10 प्रतिशत) में होती है। कुंओं से सबसे अधिक सिंचाई शहपुरा विकासखण्ड में 53 हेक्टेयर (50 प्रतिशत) में होती है। सबसे कम सिंचाई कुओं द्वारा मेंहदवानी विकासखण्ड में केवल 4 हेक्टेयर (3.77 प्रतिशत) में होती है। जिले में अन्य स्रोतों से कुल सिंचित क्षेत्र 456 हेक्टेयर है, जो कि कुल सिंचित क्षेत्र का 29.86 प्रतिशत है। अन्य स्रोतों से सबसे अधिक सिंचाई शहपुरा विकासखण्ड में 218 हेक्टेयर (47.80 प्रतिशत) में होती है। मेंहदवानी विकासखण्ड में केवल 1 हेक्टेयर (0.21 प्रतिशत) क्षेत्र में अन्य स्रोतों द्वारा सिंचाई होती है। समस्त स्रोतों से देखे तो शहपुरा विकासखण्ड में सबसे ज्यादा 650 हेक्टेयर (42.56 प्रतिशत) क्षेत्र में सिंचाई होती है। अमरपुर विकासखण्ड में सबसे कम केवल 35 हेक्टेयर (2.29

प्रतिशत) क्षेत्र में समस्त स्रोतों से सिंचाई होती है। जिले के शहपुरा विकासखण्ड में शुद्ध बोये गये क्षेत्र (40987 हेक्ट.) में मात्र 650 हेक्ट. (1.59 प्रतिशत) में सिंचाई होती है, जो समस्त विकासखण्डों में सबसे अधिक है। इसी तरह अमरपुर विकासखण्ड में शुद्ध बोये गये क्षेत्र (23721 हेक्ट.) में मात्र 35 हेक्ट. (0.15 प्रतिशत) क्षेत्र में सिंचाई होती है। जो समस्त विकासखण्डों की तुलना में सबसे कम है। जिले में अच्छी बरसात, नदी–नालों के होने के बावजूद सिंचाई की सुविधाओं का विकास नहीं हो पाया है।

तालिका 1.9.1 जिला/विकासखण्डवार सिंचाई सुविधाओं का वर्गीकरण (हेक्टेयर मे)

जिला/ विकासखण्ड	नहरें		नलकूप		कुएं		तालाब		अन्य स्रोतों से सिंचित क्षेत्र	समस्त स्रोतों से शुद्ध सिंचित क्षेत्र	शुद्ध सिंचित क्षेत्र का शुद्ध बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत
	संख्या	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित क्षेत्र	संख्या	सिंचित क्षेत्र			
जिला	38	965	अप्राप्त	अप्राप्त	441	106	अप्राप्त	अप्राप्त	456	1527	0.75
डिण्डौरी	11	176	अप्राप्त	अप्राप्त	17	9	अप्राप्त	अप्राप्त	17	202	0.45
अमरपुर	1	30	अप्राप्त	अप्राप्त	73	अप्राप्त	अप्राप्त	अप्राप्त	5	35	0.15
समनापुर	6	51	अप्राप्त	अप्राप्त	99	16	अप्राप्त	अप्राप्त	15	82	0.37
बजाग	8	221	अप्राप्त	अप्राप्त	25	19	अप्राप्त	अप्राप्त	19	259	1.14
करंजिया	1	0	अप्राप्त	अप्राप्त	17	5	अप्राप्त	अप्राप्त	181	186	0.72
शहपुरा	7	379	अप्राप्त	अप्राप्त	129	53	अप्राप्त	अप्राप्त	218	650	1.59
मेंहदवानी	4	108	अप्राप्त	अप्राप्त	81	4	अप्राप्त	अप्राप्त	1	113	0.47

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.9.2 विकासखण्डवार औसत वार्षिक वर्षा

निम्न तालिका में डिण्डौरी जिले के विकासखण्डवार वर्षा के आंकड़े दिये गये है। जिले की औसत वार्षिक वर्षा 1250 मि.मी. है। जिले की तुलना में विकासखण्ड के आंकडों को देखें तो वर्ष 07–08 में करंजिया में 1274.70 मि.मी. और अमरपुर में 1203 मि.मी. को छोड़कर पिछले तीन वर्षों में प्रत्येक विकासखण्ड में वर्षा, वार्षिक औसत से कम हुई है। करंजिया विकासखण्ड में वर्ष 2005–06 में 1043.80 मि.मी. की तुलना में वर्ष 2007–08 में 1274.70 मि. मी. वर्षा हुई है। जो कि वर्ष 2005–06 की तुलना में 22.12 प्रतिशत अधिक है। मेंहदवानी विकासखण्ड में वर्षा में 123.10 मि.मी. (12.47 प्रतिशत) की बढ़ोतरी हुई है, जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे कम है। वर्ष 2007–08 में बजाग विकासखण्ड में सबसे कम 878 मि.मी.वर्षा हुई है।

तालिका 1.9.2 विकासखण्डवार औसत वार्षिक वर्षा (मि.मी. में)

क्र.	विकासखंडवार	2005–06	2006–07	2007–08
1	डिण्डौरी	884.00	877.4	**1026.60**
2	अमरपुर	1018.00	994.0	**1203.00**
3	समनापुर	1044.00	1056.00	**1100.00**
4	बजाग	1053.30	753.60	**878.00**
5	करंजिया	1043.80	969.10	**1274.70**
6	शहपुरा	975.70	1077.60	**1197.80**
7	**मेंहदवानी**	**987.10**	**849.90**	**1110.20**

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.10 सड़क एवं रेल मार्ग

1.10.1 सड़क मार्गों का विवरण

जिले में 2005–2006 से 2007–2008 तक नई सड़को का निर्माण लगभग समान रहा, किन्तु 2007–2008 की अपेक्षा 2008–2009 के दौरान कच्ची एवं पक्की नई सड़कों के निर्माण में अत्याधिक विस्तार हुआ। 2007–2008 की अपेक्षा 2008–2009 में लोक निर्माण विभाग तथा स्थानीय निकाय द्वारा क्रमशः 10.5 प्रतिशत, 120 प्रतिशत अधिक पक्की सड़को का निर्माण किया गया। इस प्रकार पक्की सड़कों में 11.12 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। इसी प्रकार 2007–2008 की अपेक्षा 2008–2009 में लोक निर्माण विभाग, स्थानीय निकाय एवं वन विभाग द्वारा क्रमशः 200.64 प्रतिशत, 33.3 प्रतिशत, 640.4 प्रतिशत अधिक कच्ची सड़को का निर्माण किया गया। इस प्रकार कच्ची सड़कों में 432.84 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। वर्तमान में डिण्डौरी जिले में पक्की सड़कों की लंबाई 1423.23 कि0मी0 एवं कच्ची सड़कें 1433.87 कि0मी0 है। जिले में कोई रेल मार्ग नहीं है।

तालिका 1.10.1 सड़क मार्गों का विवरण

वर्ष	पक्की सड़के			कच्ची सड़के				कुल सड़कें
	लो.नि. वि.	स्थानीय निकाय	योग	लो.नि. वि.	स्थानीय निकाय	वन विभाग	कुल कच्ची सड़के	कच्ची / पक्की
2005–2006	1268.3	0	1268.3	254.8	0	0	254.8	1523.1
2006–2007	1268.3	10.28	1278.5	254.8	9	0	263.8	1542.32
2007–2008	1268.3	12.5	1280.8	259.8	9.3	0	269.1	1549.9
2008–2009	1395.73	27.5	1423.23	781.07	12.4	640.4	1433.87	2587.1

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.11 वन

डिण्डौरी जिले में वन क्षेत्र 230745.52 हेक्ट. में फैला हुआ है जो कि कुल क्षेत्रफल का 37.7 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में से संरक्षित वन क्षेत्र 228584 हेक्ट. एवं सुरक्षित वन 2160 हेक्ट. है। डिण्डौरी जिले के वन आर्द्र उच्च साल वन है। जिले के प्रमुख वन उत्पाद लकड़ी है। जिसमे साल, सागौन, सरई प्रमुख है। जिले में लघु वनोपज के रूप में बहुमूल्य औषधी पौधों की प्रजातियॉ एवं तेदू पत्ता, अचार, हर्रा, बहेड़ा, महुआ आदि प्रमुख है। जिले के वन क्षेत्र का 64070 हेक्ट. क्षेत्र भारत सरकार द्वारा चिन्हित अचानकमार–अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व क्षेत्र में आता है जिसे यूनिसेफ द्वारा मैब नेटवर्किंग प्रोग्राम के तहत् चिन्हित किया गया है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं विश्व के स्तर से भी अधिक औसत जैव विविधता है जिसके कारण विदेशी एवं देश के पादप वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं के लिए विशेष रूचि का क्षेत्र है।

क्र.	वनभूमि (हेक्टेयर में)	इमारती लकडी का उत्पादन (घनमीटर में)	जलाऊ लकडी (चटटे में)	तेंदूपत्ता (मानक बोरा)
1	230745.52	20155.5	15345	46154

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.12 महिला एवं बाल विकास

1.12.1 जिला/विकासखण्डवार आंगनवाड़ी केन्द्रो, बच्चों एवं गर्भवती माताओं की जानकारी

जिले में कुल 1639 आंगनवाड़ी केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। जिनमें 0–06 वर्ष की आयु के 83563 बच्चे तथा 24998 गर्भवती माँताए दर्ज है। जिले की आंगनवाड़ी में औसत बच्चों की संख्या 51 है। डिण्डौरी विकासखण्ड में सबसे अधिक 301 आंगनवाड़ी केन्द्र हैं। जिनमें 16014 (19 प्रतिशत) बच्चे तथा 6651 (27 प्रतिशत) गर्भवती माँताए दर्ज है जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में अधिक हैं। मेंहदवानी विकासखण्ड में सबसे कम 209 आंगनवाड़िया है जिनमें 10316 (12 प्रतिशत) बच्चे तथा 3191 (13 प्रतिशत) गर्भवती माँताए दर्ज हैं। मेंहदवानी विकासखण्ड में आंगनवाड़ियों की संख्या सबसे कम होने के बावजूद भी प्रति आंगनवाड़ी औसतन बच्चों की संख्या 49 है जो कि अन्य विकासखण्डों की तुलना में

सबसे कम हैं। विभिन्न विकासखण्डों में प्रति आँगनबाड़ी बच्चों की औसत संख्या भिन्न पाई गई, शहपुरा और समनापुर विकासखण्डों में प्रति आँगनबाड़ी बच्चों की संख्या क्रमशः 61 व 60 पाई गई, जबकि अन्य विकासखण्डों में यह संख्या 60 से नीचे पाई गई। इन केन्द्रों के माध्यम से महिलाओं एवं बच्चों को पूरक पोषण आहार स्वास्थ्य जांच टीकाकरण स्कूल पूर्व अनौपचारिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा आदि प्रदान की जाती है।

तालिका 1.12.1 जिला/विकासखण्डवार आंगनवाड़ी केन्द्रो, बच्चों एवं गर्भवती माताओं की जानकारी

क्र.	विकासखण्ड	कुल आंगनवाड़ियों की संख्या	आंगनवाड़ी में दर्ज 0–6 वर्ष के बच्चों की संख्या	आंगनवाड़ी में दर्ज गर्भवती. माताओं की संख्या	प्रति आँगनवाड़ी बच्चों की औसतन संख्या
	जिला	1639	83563	24998	51
1	डिण्डौरी	301	16,014	6,651	53
2	अमरपुर	212	10,517	2,354	50
3	समनापुर	225	13,512	3,128	60
4	बजाग	244	13,334	3,839	55
5	करंजिया	237	7,025	2,644	30
6	शहपुरा	211	12,845	3,191	61
7	मेंहदवानी	209	10,316	3,191	49

स्रोत : परख website (http://mid.mp.nic.in)

1.13 पेयजल

1.13.1 जिला/विकासखण्डवार पेयजल सुविधायुक्त ग्राम

जिले के 902 आबाद ग्रामों में से 897 ग्रामों में हैण्ड पम्प की सुविधा उपलब्ध है, जबकि 44 ग्रामों में नल–जल सुविधा भी उपलब्ध है। डिण्डौरी विकासखण्ड में सबसे अधिक 188 आबाद ग्राम हैं, सभी हैण्ड पम्प सुविधा युक्त हैं तथा 6 ग्रामों में नल–जल सुविधा भी उपलब्ध है। बाजाग विकासखण्ड में 92 आबाद ग्राम है, जिनमें से 91 ग्रामों में हैण्ड पम्प सुविधा उपलब्ध है, तथा 10 ग्रामों में नल–जल सुविधा भी उपलब्ध है। सामान्यतः सभी विकासखण्डों में अधिकतर ग्रामों में हैण्ड पम्प की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त अमरपुर, समनापुर तथा करंजिया विकासखण्डों में भी 5–5 ग्राम नल–जल सुविधा युक्त हैं।

तालिका 1.13.1 जिला/विकासखण्डवार पेयजल सुविधायुक्त ग्राम

विकासखण्ड	कुल आबाद ग्राम	हेंड पंप सुविधा युक्त ग्राम	नल प्रदाय सुविधा युक्त ग्राम
जिला	902	897	44
डिण्डौरी	188	188	6
अमरपुर	101	100	5
समनापुर	115	114	5
बजाग	92	91	10
करंजिया	104	104	5
शहपुरा	191	190	6
मेंहदवानी	111	110	7

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.14 सहकारिता

1.14.1 जिला/विकासखण्डवार शासकीय उचित मूल्य की दुकानों का विवरण

जिले में कुल 184 उचित मूल्य की दुकानें हैं। जिनमें से सहकारी क्षेत्र में 180 (97.83 प्रतिशत) एवं निजी क्षेत्र में 4 (2.17 प्रतिशत) दुकानें हैं। इनमें से ग्रामीण क्षेत्र में 178 (96.77 प्रतिशत) एवं शहरी क्षेत्र में केवल 06 (3.26 प्रतिशत) दुकानें है। उचित मूल्य की दुकानों की उपब्धता शहपुरा विकासखण्ड में सबसे अधिक 37 (20.11 प्रतिशत), कुल 37 दुकानों में से 34 ग्रामीण क्षेत्र में तथा 4 शहरी क्षेत्र में हैं। सबसे कम अमरपुर विकासखण्ड में 18 उचित मूल्य की दुकानें हैं। निजी क्षेत्र की सभी दुकानें शहपुरा विकासखण्ड में हैं। शहपुरा के अतिरिक्त केवल डिण्डौरी के शहरी क्षेत्रों में उचित मूल्य की दुकानें हैं।

तालिका 1.14.1 जिला/विकासखण्डवार शासकीय उचित मूल्य की दुकानों का विवरण

क्र.	विकासखण्ड	दुकानों की संख्या			शहरी	ग्रामीण
		सहकारी क्षेत्र	निजी क्षेत्र	कुल		
	जिला	180	4	184	06	178
1	डिण्डौरी	29	NA	29	3	26
2	अमरपुर	18	NA	18	NA	18
3	समनापुर	24	NA	24	NA	24
4	बजाग	29	NA	29	NA	29
5	करंजिया	19	NA	19	NA	19
6	शहपुरा	33	04	37	3	34
7	मेंहदवानी	28	NA	28	NA	28

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.15 संचार

1.15.1 डाक एवं संचार सुविधाऐं

निम्न तालिका में जिले की संचार स्थिति को दर्शाया गया है। जिले में एक प्रधान डाकघर, 5 प्राथमिक डाकघर, 93 डाक शाखा कार्यालय, 1 तार कार्यालय, 57 पी.सी.ओ. एवं 4730 टेलीफोन कनेक्शन है। सबसे अधिक डाक एवं संचार सुविधाएं डिण्डौरी विकासखण्ड में उपलब्ध हैं, जिनमें 1 प्रधान डाकघर, 1 प्राथमिक उप डाकघर, 22 डाक शाखा कार्यालय, 1 तार कार्यालय, 31 पी.सी.ओ. एवं 1750 टेलीफोन कनेक्शन की सुविधाएं शामिल हैं। सबसे कम संचार सुविधाए अमरपुर विकासखंड में हैं जिनमें 1 उप डाकघर, 9 शाखा कार्यालय, 1 पीसीओ एवं मात्र 185 टेलीफोन कनेक्शन शामिल है।

तालिका 1.15.1 डाक एवं संचार सुविधाऐं

जिला / विकासखण्ड	प्रधान डाकघर	प्राथमिक / उप डाकघर	डाक शाखा कार्यालय	तार कार्यालय	पी0सी0ओ0	टेलीफोन कनेक्शन
जिला	1	5	93	1	57	4730
डिण्डौरी	1	1	22	1	31	1750
अमरपुर	NA	1	9	NA	1	185
समनापुर	NA	NA	10	NA	4	375
बजाग	NA	1	12	NA	9	575
करंजिया	NA	1	11	NA	3	555
शहपुरा	NA	1	16	NA	9	950
मेंहदवानी	NA	NA	13	NA	NA	340

स्रोत जिला सांख्यिकी पुस्तिका, वर्ष 2009

1.16 विद्युतीकरण

1.16.1 जिले की विद्युत खपत

वर्ष 2005–06 में जिले में कुल विद्युतीकृत ग्रामों की संख्या 848 थी, जो कि वर्ष 2008–09 में बढ़कर 860 हो गई। बिजली का घरेलु उपयोग वर्ष 2005–06 की तुलना में 105. 31 किलो वॉट घण्टे से बढ़कर वर्ष 2008–09 में 176.53 किलो वॉट घण्टे हो गया। जिले में बिजली के व्यवसायिक उपयोग में वर्ष 2005–06 (32.05 किलो वॉट घण्टे) से लगातार गिरावट दर्ज की गई है, यह वर्ष 2008–09 में 24.58 किलो वॉट घण्टे हो गया। जिले में जल प्रदाय की बिजली की खपत भी वर्ष 2005–06 (8.44 किलो वॉट घण्टे) की तुलना में कम होकर वर्ष

2008–09 में 2.09 किलो वॉट घण्टे रह गई। वर्ष 2005–06 की तुलना में वर्ष 2008–09 में जल प्रदाय में बिजली खपत में 75.23 प्रतिशत की कमी आई। खेती में सिंचाई के लिये बिजली उपयोग वर्ष 2005–06 में 1.60 किलो वॉट घण्टे की तुलना में 2008–09 के बीच 1. 90 किलो वॉट घण्टे हो गया, खेती में बिजली की खपत में वर्ष 2005–06 से वर्ष 2008–09 के अंतराल में मात्र 18.75 प्रतिशत बढ़ोत्तरी दर्ज हुई। जिले में प्रति व्यक्ति विद्युत खपत 79.92 किलो वॉट घण्टे से कम होकर 2008–09 में 46.22 किलो वॉट घण्टे हो गई। इस प्रकार वर्ष 2005–06 की तुलना में वर्ष 2008–09 में प्रति व्यक्ति बिजली के उपभोग में 43 प्रतिशत की कमी आई है। जिले की कुल विद्युत खपत वर्ष 2005–06 में 436.58 लाख यूनिट से घटकर वर्ष 2008–09 में 209.83 लाख यूनिट हो गई। इस प्रकार जिले की कुल विद्युत खपत में वर्ष 2005–06 की तुलना में 2008–09 में 51.93 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई।

तालिका 1.16.1 जिले की विद्युत खपत (हजार कि0 वाट घंटे)

क्र.	विवरण	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09
1	विद्युतिकृत ग्राम संख्या	848	860	860	860
2	घरेलु उपभोग	105.31	106.20	102.39	176.53
3	व्यावसायिक	32.05	16.40	31.07	24.58
4	जल प्रदाय	8.44	5.0	8.19	2.01
5	कृषि–सिंचाई	1.60	1.35	1.30	1.90
6	कुल विद्युत उपभोग (लाख युनिट में)	436.58	319.41	157.40	209.83
7	प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग	79.92	58.47	28.81	46.22

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका 2009

1.17 उद्योग

1.17.1 जिला/विकासखण्डवार उद्योगों का वर्गीकरण

डिण्डौरी जिले में कुल 212 लघु उद्योग एवं 34 मध्यम उद्योग हैं। जिले में एक भी बड़ा उद्योग नहीं है। कुल लघु उद्योग का 48.11 प्रतिशत (102) तथा मध्यम उद्योगों का 52.94 प्रतिशत (18) डिण्डौरी विकासखण्ड में हैं। मध्यम श्रेणी के उद्योग केवल समनापुर एवं शहपुरा विकासखण्ड में 8–8 हैं, जिनकी नियोजन राशि क्रमशः 4 तथा 2.5 लाख रूपये है, जबकि अन्य विकासखण्डों में जैसे अमरपुर, बजाग, करंजिया तथा मेंहदवानी में मध्यम श्रेणी के एक भी उद्योग नहीं है। लघु श्रेणी के सबसे कम 11–11 उद्योग करंजिया, शहपुरा तथा मेंहदवानी

विकासखण्ड में है, जिनकी नियोजन राशि क्रमशः 13,14 और 19 लाख रूपये है। जिले के मध्यम तथा लघु उद्योगों की कुल नियोजित राशि क्रमशः 440 लाख रूपये तथा 18.5 लाख रूपये है।

तालिका 1.17.1 जिला/विकासखण्डवार उद्योगों का वर्गीकरण

जिला/ विकासखण्ड	लघु उद्योग		मध्यम उद्योग	
	संख्या	नियोजन (लाख रु0 में)	संख्या	नियोजन (लाख रु0 में)
जिला	212	440	34	18.5
डिण्डौरी	102	219	18	12
अमरपुर	32	50	NA	NA
समनापुर	26	99	8	4
बजाग	19	26	NA	NA
करंजिया	11	13	NA	NA
शहपुरा	11	14	8	2.5
मेंहदवानी	11	19	NA	NA

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका, 2009

1.18 वित्तीय संस्थायें

1.18.1 विकासखण्डवार वाणिज्यिक/सहकारी बैंको की स्थिति

डिण्डौरी जिले में वर्ष 2008–09 के आंकड़ों के अनुसार 30 राष्ट्रीयकृत एवं सहकारी बैंक की शाखाए स्थापित है। कुल शाखाओं से 11,46,565 रूपये का ऋण दिया गया। जिले में बैंकों/संस्थाओं में कुल जमा राशि वर्ष 2009 में 2740375 हजार रूपये थी, तथा कुल अग्रिम राशि 1146565 हजार रूपये थी। जिसमें सबसे अधिक 859859 हजार रूपये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 5 शाखाओं में जमा थी, जो कि कुल जमा राशि का 31.37 प्रतिशत था, तथा यूनियन बैंक की एक शाखा में सबसे कम 64482 हजार रूपये जमा थी, जो कुल जमा राशि का 2.3 प्रतिशत था। सबसे अधिक अग्रिम राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा 288345 हजार रूपये दी गई, जो कि कुल अग्रिम राशि का 25.14 प्रतिशत था। जिले में पंजाब नेशनल बैंक की एक शाखा द्वारा सबसे कम मात्र 21013 हजार रूपये की अग्रिम राशि दी गई जो कि कुल अग्रिम राशि का 1.8 प्रतिशत था।

तालिका 1.18.1 विकासखण्डवार वाणिज्यिक/सहकारी बैंको की स्थिति

क.	बैंक का नाम	शाखाऐं	कुल जमा राशि हजार में	कुल अग्रिम राशि हजार में
	जिला	30	2740375	1146565
1	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	7	621296	145216
2	स्टेट बैक ऑफ इंडिया	5	859859	288345
3	पंजाब नेशनल बैंक	1	70963	21013
4	युनियन बैंक ऑफ इंडिया	1	64482	36780
5	ग्रामीण बैंक	11	624066	308474
6	सहकारी बैक	5	499709	346737

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिका, 2009

अध्याय–दो

SWOT विश्लेषण एवं जिला दृष्टि

पिछड़ा क्षेत्र अनुदान कोष से जिले के विकास के लिये पंचवर्षीय कार्ययोजना बनाने के लिये जिले की वर्तमान स्थिति को समझने में अलग–अलग कई माध्यमों से जानकारी जुटाई गई ताकि जिले की ताकत, कमजोरी, अवसर एवं खतरों को ठीक प्रकार से जाना जा सके। जानकारी जुटाने के लिये जिले के 7 जनपद एवं नगरीय निकायों के स्तर पर जनप्रतिनिधियों एवं विभाग प्रमुखों के साथ कार्यशालायें आयोजित की गई। साथ ही जनपद एवं नगरीय निकायों के स्तर पर जनप्रतिनिधियों एवं विभागीय कर्मचारियों को बी.आर.जी.एफ. अंतर्गत योजना निर्माण हेतु संवेदनशील किया गया। गांवों एवं कस्बों के आधारभूत सर्वे एवं स्थानीय लोगों के साथ बैठक कर उनकी जरूरतों एवं आकांक्षाओं की पहचानकर कुछ क्षेत्रों के महत्वपूर्ण अधोसंरचना एवं अन्य अन्तरों को जाना गया।

बी.आर.जी.एफ. योजनान्तर्गत लोकोन्मुखी कार्ययोजना निर्माण, योजना आयोग के द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है जो कि आने वाले समय में नियोजन की प्रक्रिया को और मजबूत बनायेगा। इस तरह के नियोजन में स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी के साथ स्थानीय जरूरतों के आधार पर विभिन्न परिस्थितियों का विश्लेषण कर विकास कार्यो की दिशा तय होती है।

जनपद एवं नगरीय निकाय स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन कर नियोजन प्रक्रिया पर लोगों की समझ बनाने के प्रयास किए गये है। जिसमें ग्रामीण व नगरीय निकाय स्तर पर आम लोगों की सहभागिता से स्थानीय जरूरतों को पहचानने, अपने गांव या वार्ड के विकास का सपना देखने, विकास के अन्तर को पहचानने और विकास कार्य तय करने संबंधी मार्गदर्शन दिया गया है। विभिन्न जनपदों में सरपंच, सचिव, विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों एवं जनपद पंचायतों के प्रतिनिधियों के अलावा स्थानीय विधायकों एवं सासंद/सांसद प्रतिनिधियों द्वारा भी कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदारी निभाई गई, जो कि प्रभावी और लोकोन्मुखी कार्ययोजना विकास हेतु अतिआवश्यक थी। बी.आर.जी.एफ. योजना के नियोजन में विधायकों एवं सांसदों का जुडाव होने से भविष्य में प्लानिंग की प्रक्रिया को मजबूती मिलेगी।

कार्यशाला में मुख्य रूप से पिछड़ा क्षेत्र अनुदान कोष के तहत् अगले पांच वर्षो में नगरीय निकाय में स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि क्षेत्रों में अधोसंरचना, आजीविका एवं मानव क्षमता विकास की संभावनाओं एवं आवश्यकताओं पर चर्चा की गई।

नगरीय क्षेत्र की कार्यशाला में नगर के विधायक, नगर प्रशासक, नगर पालिका अध्यक्ष, पार्षद, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, नगर के जागरूक नागरिक और स्थानीय पत्रकार आदि उपस्थित रहे।

संस्था ने पिछड़ा क्षेत्र अनुदान कोष (बी.आर.जी.एफ.) क्या है ? और इसे भारत सरकार ने क्यों चालू किया है तथा पिछड़ा क्षेत्र अनुदान कोष में जिलों का चयन किन आधारों पर हुआ है आदि पर सभी नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों की समझ बनाने का प्रयास किया।

2.1 जिले की ताकतों, कमजोरियों, अवसरों एवं खतरों (SWOT) का विश्लेषण

जिले में अपने विकास के लिये जल, वन जैसे प्राकृतिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। साथ ही कुछ ऐसे कारण भी मौजूद हैं, जो विकास की गति को रोकते हैं। इन दोनों पहलुओं को जानकर ही जिले की पंचवर्षीय योजना बनाई जाना चाहिये। इससे योजना वास्तविकता के नजदीक होगी। इन बातों को ध्यान मे रखकर जिले की ताकत, कमजोरी, अवसर एवं खतरों पर विचार किया गया। जिले में विकसित एवं अविकसित दोनों क्षेत्र हैं। जिले में उपलब्ध संसाधनों को देखते हुए यह कहा जा सकता है, कि जिले में विकास की अपार क्षमताऐं है। कुछ प्रमुख क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों के विकास पर अगर उचित ध्यान दिया जाये तो जिले का विकास तेज गति से हो सकता है।

2.1.1 ताकत

- जिले में सघन वन एवं बहुमूल्य इमारती लकडियों का होना।
- जिले का जनसंख्या घनत्व कम (95) होना।
- नर्मदा नदी एवं बरगी बांध की मुख्य नहर का जिले में होना।
- जिले में पर्याप्त औसत वार्षिक वर्षा (1250 मि. मी.) का होना।
- जिले में बैगाओं के विकास के लिए बैगा चक का निर्माण एवं बैगा विकास प्राधिकरण का होना।

- अन्य जिलों एव प्रदेश की तुलना में लिंगानुपात (991 प्रति हजार) बेहतर होना।
- अचानकमार–अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व में प्रचुर मात्रा में जैव विविधता के कारण भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय द्वारा इसका अध्ययन हेतु चिन्हित होना।

2.1.2 कमजोरियाँ

- अधिकांश कृषि क्षेत्र का एक फसलीय होना एवं अधिकतर फसलों के उत्पादन में लगातार कमी होना।
- बरगी बांध की मुख्य नहर से जोड़ी जाने वाली उपनहरों का जिले में न होना।
- प्रदेश एवं अन्य जिलों की तुलना में बोये गये क्षेत्र में सिंचित क्षेत्र (0.75 प्रतिशत मात्र) का नगण्य होना।
- प्रदेश की औसत साक्षरता दर (64.11) की तुलना में जिले की साक्षरता दर (45.07) एवं महिला साक्षरता दर (31.83) का बहुत कम होना।
- बड़े उद्योगों का नहीं होना।
- रेल मार्ग का नहीं होना।
- अनेकों गांवो का दुर्गम क्षेत्रो में होना।
- नगरीय क्षेत्रों का समुचित विकास नहीं होना।

2.1.3 अवसर

- बोये गये क्षेत्र का 99.25 प्रतिशत असिंचित क्षेत्र को सिंचित क्षेत्र के रूप में बदलने की संभावनायें।
- सिंचित क्षेत्र के विस्तार के लिये अच्छी औसत वार्षिक वर्षा (1250 मि.मी.) एवं नदी–नालों का होना।
- बरगी बांध की मुख्य नहर से जोड़ी जाने वाली उपनहरों का भावी विकास होना।
- क्षेत्र में ईको–पर्यटन को विकसित करने की संभावना होना।

- बारहमासी नदी, नालों एवं अन्य जल संसाधनों के उपयोग से छोटे पनबिजली घर बनाने की संभावना होना।
- लघु वनोपजों जैसे आंवला, चिरौंजी, महुआ आदि का प्रस्संकरण करना।
- जिले की साक्षरता दर को बढ़ाना।
- लघु एवं मध्यम उद्योगो को स्थापित करना।
- सड़क मार्गों का विस्तार करना।

2.1.4 खतरा

- खेती के विस्तार हेतु वनों की कटाई होना।
- आदिवासियों का वनों पर परंपरागत अधिकार जताना और वनाधिकार कानून के बीच टकराव होना।
- सीमा क्षेत्र के गांवों में अवांछित गतिविधियों के बढ़ने की संभावना।
- रोजगार के अवसरों में कमी के कारण लोगों का पलायन करना।
- सिंचित क्षेत्र अत्याधिक कम होने से खाद्य उत्पादन का कम होना।

2.2 जिला दृष्टि

सड़क, सिंचाई अधोसंरचना एवं ईको टूरिज्म के विस्तार तथा रोजगारोन्मुखी शिक्षा के माध्यम से, जिले के पिछड़े क्षेत्रों को मुख्य धारा से जोड़ना।

2.3 जिले के विभिन्न विकासखण्डों की ताकतों, कमजोरियों, अवसरों एवं खतरों का तुलनात्मक विश्लेषण

जिले के सामाजिक, भौगोलिक एवं आर्थिक क्षेत्रों से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण करने से यह प्रतीत होता हैं कि जिले के विभिन्न विकासखण्डों में लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां कमोबेश एक जैसी है। अपितु कुछ मापदण्डो पर विभिन्न विकासखण्ड आपस में एक दूसरे से भिन्न है।

डिण्डौरी विकासखण्ड –

जिले का डिण्डौरी विकासखण्ड भौगोलिक क्षेत्रफल के मान से जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में बड़ा है साथ ही इस विकासखण्ड का जनसंख्या घनत्व 99 प्रति वर्ग कि.मी. है जो इस विकासखण्ड की ताकत है। इस विकासखण्ड का जनसंख्या वृद्धि दर –2.48 प्रतिशत है जो जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में न्यूनतम है जो इस विकासखण्ड को स्पष्ट से ताकत प्रदान करता है। डिण्डौरी विकासखण्ड में 1 महाविद्यालय एवं 1 व्यावसायिक शिक्षण संस्थान का होना शिक्षा के क्षेत्र में इस विकासखण्ड को जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में ताकत प्रदान करता है। इस विकासखण्ड में कुल बोए गए क्षेत्र से सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत 0.45 है जो कृषि के क्षेत्र में इस विकासखण्ड के लिए खतरा है।

इस विकासखण्ड में उचित मूल्य की दुकानो की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सर्वाधिक हैं जिसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में 31 पी.सी.ओ. का होना, संचार सुविधाओं के क्षेत्र में इस विकासखण्ड को ताकत प्रदान करता है।

अमरपुर विकासखण्ड –

अमरपुर विकासखण्ड में जनसंख्या वृद्धि दर का प्रतिशत जिले के कुछ विकासखण्डों की तुलना में कम है इसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस विकासखण्ड में एक भी महाविद्यालय एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान का न होना इस क्षेत्र में इस विकासखण्ड की कमजोरी है। इस विकासखण्ड में 50 प्रति (0–6 वर्ष) के बच्चों पर एक ऑगनवाड़ी केन्द्र संचालित है जो इस विकासखण्ड को जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में ताकत व अवसर प्रदान करता है।

इस विकासखण्ड में उचित मूल्य की दुकानों की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों से सबसे कम है जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड की औसत वर्षा 1203 मि.मी है जिसे विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में केवल एक पी.सी.ओ. का होना संचार सुविधाओं के क्षेत्र में इस विकासखण्ड के लिए खतरा है।

समनापुर विकासखण्ड –

इस विकासखण्ड में केवल 6 हाईस्कूल एवं एक व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान है जो इस विकासखण्ड के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए एक खतरे के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में एक भी महाविद्यालय का न होना विकासखण्ड की कमजोरी है। इस विकासखण्ड में केवल 1 ऐलोपैथिक चिकित्सा अधिकारी का होना इस विकासखण्ड के लिए एक खतरा है। इस विकासखण्ड में कुल क्षेत्रफल से द्विफसलीय क्षेत्रफल जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में कम है साथ ही कुल बोए गए क्षेत्र से सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत कम है जिसे कृषि के क्षेत्र में इस विकासखण्ड के लिए खतरे के रूप में देखा जा सकता है। विकासखण्ड में प्रति 60 (0–6 वर्ष) बच्चों पर एक आंगनवाडी केन्द्र संचालित है,

जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड इसी प्रकार विकासखण्ड में एक भी तार कार्यालय का न होना एवं केवल 4 पी.सी.ओ. का होना संचार सुविधाओं के क्षेत्र में इस विकासखण्ड की कमजोरी है।

बजाग विकासखण्ड –

इस विकासखण्ड का जनसंख्या वृद्धि दर जिले के कुछ विकासखण्डों की तुलना में कम है साथ ही इस विकासखण्ड का जनसंख्या घनत्व 83 प्रति वर्ग कि.मी. है जिसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में केवल 6 हाईस्कूल एवं 4 उच्चतर माध्यमिक शालाऐं हैं जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में एक भी महाविद्यालय का न होना इस विकासखण्ड के लिए खतरा है। इस विकासखण्ड में केवल 3 प्राथमिक स्वास्थ केन्द्रों का होना इस विकासखण्ड की कमजोरी है। इस विकासखण्ड में ऐलोपैथिक चिकित्सा अधिकारियों की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सर्वाधिक है, जिसे विकासखण्ड के लिए एक अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में एक भी मध्यम उद्योग नहीं है, इसे इस विकासखण्ड के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से खतरे के रूप में देखा जा सकता है।

करंजिया विकासखण्ड –

जिले का करंजिया विकासखण्ड भौगोलिक क्षेत्रफल के मान से जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे छोटा है। इस विकासखण्ड में हाईस्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं की संखया जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में कम है, जिसे शिक्षा के क्षेत्र में इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में एक भी महाविद्यालय का न होना इस विकासखण्ड के लिए खतरा है। इस विकासखण्ड में प्राथमिक स्वास्थ केन्द्रों, उप स्वास्थ केन्द्रों एवं ऐलोपैथिक चिकित्सकों की संख्या जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में कम है जो इस विकासखण्ड की कमजोरी है। इस विकासखण्ड में कुल क्षेत्रफल से द्विफसलीय क्षेत्रफल का प्रतिशत जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सर्वाधिक है जो इस विकासखण्ड को स्पष्ट रूप से ताकत प्रदान करता है। इस

विकासखण्ड में शुद्ध सिंचित क्षेत्र का शुद्ध बोए गए क्षेत्र से प्रतिशत काफी कम है जो कृषि के क्षेत्र में इस विकासखण्ड की कमजोरी है। इस विकासखण्ड में प्रति 30 (0–6 वर्ष) बच्चों पर एक ऑगनवाडी केन्द्र संचालित है, जो महिला बाल विकास के क्षेत्र में इस विकासखण्ड जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में ताकत एवं अवसर प्रदान करता है। इस विकासखण्ड में एक भी मध्यम उद्योग नहीं है इसे इस विकासखण्ड के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से खतरे के रूप में देखा जा सकता है।

शहपुरा विकासखण्ड –

इस विकासखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर एवं जनसंख्या घनत्व जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में कम है, जिसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में एक भी महाविद्यालय का होना इस विकासखण्ड को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ताकत प्रदान करता है। इस विकासखण्ड में हाईस्कूलों की संख्या जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में कम है, जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में प्राथमिक एवं उप स्वास्थ केन्द्रों की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में अधिक है जिसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में कुक्कुट संख्या जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में अधिक है, जो इस विकासखण्ड कुक्कुट विकास के क्षेत्र में अवसर प्रदान करती है। इस विकासखण्ड में पशु चिकित्सालयों की संख्या जिले में सर्वाधिक है, जिसे इस विकासखण्ड के लिए ताकत एवं अवसर के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में उचित मूल्य दुकानों की संख्या जिले में सर्वाधिक है जो इस विकासखण्ड को स्पष्ट रूप से ताकत प्रदान करती है।

मेंहदवानी विकासखण्ड –

इस विकासखण्ड का जनसंख्या वृद्धि दर जिले के ज्यादातर विकासखण्डों की तुलना में कम है, जिसे इस विकासखण्ड की ताकत के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में उच्चतर माध्यमिक शालाओं की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सबसे कम है, जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड

में एक भी महाविद्यालय का न होना इस विकासखण्ड के लिए खतरा है। इस विकासखण्ड में उप स्वास्थ केन्द्रों एवं ऐलोपैथिक चिकित्सकों की संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना मे सबसे कम है, जिसे इस विकासखण्ड की कमजोरी के रूप में देखा जा सकता है। इस विकासखण्ड में कुक्कुट संख्या जिले के अन्य विकासखण्डों की तुलना में सर्वाधिक है, जो इस विकासखण्ड कुक्कुट विकास के क्षेत्र में अवसर प्रदान करती है। इस विकासखण्ड में एक भी मध्यम उद्योग नहीं है इसे इस विकासखण्ड के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से खतरे के रूप में देखा जा सकता है।